नया टीचर

क्लास में आते ही
नये टीचर ने
बच्चों को
अपना लंबा चौड़ा परिचय दिया

बातों ही बातों में
उसने जान लिया की
लड़कियों के इस क्लास में
सबसे तेज और सबसे आगे
कौन सी लड़की है ?

उसने खामोश सी बैठी
उस लड़की से पूछा
बेटा आपका नाम क्या है ?
लड़की खड़ी हुई और बोली
जी सर , मेरा नाम है जूही

टीचर ने फिर पूछा
पूरा नाम बताओ बेटा ?

जैसे उस लड़की ने
नाम मे कुछ छुपा रखा हो
लड़की ने फिर कहा
जी सर , मेरा पूरा नाम जूही ही है

टीचर ने सवाल बदल दिया
और पूछा कि अच्छा
तुम्हारे पापा का नाम बताओ ?
लड़की ने जवाब दिया
जी सर , मेरे पापा का नाम है
शमशेर !!

टीचर ने फिर पूछा
अपने पापा का पूरा नाम बताओ
लड़की ने जवाब दिया
मेरे पापा का पूरा नाम
शमशेर ही है सर जी

अब टीचर कुछ सोचकर बोला
अच्छा अपनी माँ का पूरा नाम
बताओ
लड़की ने जवाब दिया
सर जी , मेरी माँ का पूरा नाम है
निशा

टीचर के पसीने छूट चुके थे
क्योंकि अब तक
वो उस लड़की की फैमिली के
पूरे बायोडाटा में
जो एक चीज
ढूंढने की कोशिश कर रहा था
वो उसे नही मिला था !!

उसने आखिरी पैंतरा आजमाया
बोला -अच्छा तुम कितने भाई बहन
हो ?
टीचर ने सोचा कि
जो चीज वो ढूंढ रहा है
शायद इसके भाई बहनों के नाम मे
वो क्लू मिल जाये ?

लड़की ने टीचर के
इस सवाल का भी
बड़ी मासूमियत से जवाब दिया
बोली -सर जी , मैं अकेली हूँ
मेरे कोई भाई बहन नही है !!

अब टीचर ने
सीधा और निर्णायक सवाल पूछा
बेटे तुम्हारा धर्म क्या है ?

लड़की ने
इस सीधे से सवाल का भी
सीधा सा जवाब दिया
बोली -सर मैं एक विद्यार्थी हूँ
और ज्ञान प्राप्त करना ही
मेरा धर्म है !
मुझे पता है कि
अब आप मेरे पेरेंट्स का धर्म पूछोगे
!!

तो मैं आपको बता दूं कि
मेरे पापा का धर्म है मुझे पढ़ाना
और मेरी मम्मी की जरूरतों को
पूरा करना
और मेरी मम्मी का धर्म है
मेरी देखभाल
और मेरे घर की जरूरतों को
पूरा करना

लड़की का जवाब सुनकर
टीचर के होश उड़ गये
उसने टेबल पर रखे
पानी के ग्लास की ओर देखा
लेकिन उसे उठाकर पीना भूल गया !

तभी लड़की की आवाज
एक बार फिर उसके कानों में
किसी धमाके की तरह गुंजी
सर मैं विज्ञान की छात्रा हूँ
और एक साइंटिस्ट बनना चाहती हूँ

जब अपनी पढ़ाई पूरी कर लूँगी
और अपने माँ बाप के
सपनों को पूरा कर लूँगी
तब कभी फुरसत में
सभी धर्मों के अध्ययन में जुटूंगी
और जो भी धर्म
विज्ञान की कसौटी पर
खरा उतरेगा
उसे अपना लूँगी

लेकिन अगर
धर्मग्रंथों के उन पन्नों में
एक भी बात विज्ञान के विरुद्ध हुई
तो मैं उस पूरी पवित्र किताब को
अपवित्र समझूँगी
और उसे कूड़े के ढेर में
फेंक दूंगी !

क्योंकि साइंस कहता है
एक गिलास दूध में
अगर एक बूंद भी
केरोसिन मिली हो तो
पूरा का पूरा दूध ही बेकार हो जाता
है!

लड़की की बात खत्म होते ही
पूरी क्लास
साथी लड़कियों की
तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज
उठी!!

टीचर के पसीने छूट चुके थे !!
तालियों की गूंज उसके कानों में
गोलियों की गड़गड़ाहट की तरह
सुनाई दे रहे थे !

उसने आंखों पर लगे
धर्म के मोटे चश्मे को उतार कर
कुछ देर के लिए टेबल पर रख दिया
और पानी का ग्लास उठाकर
एक ही सांस में गटक लिया

थोड़ी हिम्मत जुटा कर
लड़की से बिना नजर मिलाये ही
बोला
बेटा.....
हिंद को तुम पर नाज़ है!

- साईबर नजर

कबीर जयंती के अवसर पर उनकी याद, कबीर के उलट रकीब

कनक तिवारी

कबीर ने मस्जिद में बांग देते मुल्ला से कहा था, का बहरो भयो खुदाय। अब मोदी ने मगहर में बांग दी है तो कहीं कबीर को ही बहरा न होना पड़े।

कबीरदास भारतीय भक्तिकाल के सबसे पहले जन्मजात तथा बड़े कवि होने के नाते साथ साथ सबसे बड़े आधुनिक भारतीय कवि और विश्व कविता को भारतीय चुनौती हैं। कबीर संभवत: अकेले कवि हैं जिन्हें एक साथ बहुविध अर्थों में धार्मिक और सेक्युलर कहा जा सकता है। धर्म का एक अर्थ मजहब से है। इसलिए मुसलमान जुलाहा परिवार के सदस्य कबीर हिन्दू या मुसलमान दोनों होते हुए अथवा नहीं होते हुए दोनों मजहबों की पृथक पृथक सर्वोच्चता के प्रतिमान हैं। वे दोनों मजहबों की गंगा जमुनी संस्कृति के तीर्थ प्रयागराज भी हैं। सेक्युलर होने के अर्थ में कबीर भारतीय संविधान की मजहब निरपेक्षता की भावना के अनुरूप हैं। कबीर किसी मजहब के संत नहीं होने से प्रत्येक मजहब के प्रति निरपेक्ष हैं। सेक्युलर सापेक्षता के अनुसार कबीर सर्वोच्च अर्थों में धार्मिक होते हुए लगातार सेक्युलर बने रहते हैं। कबीर पहले और असरदार कवि हैं जिन्होंने मनुष्य और ईश्वर के रिश्ते को जनवादी चश्मे से देखने की कोशिश की है।

यह अजूबा है कि हिन्दू धर्म के तीन बड़े देवताओं विष्णु, शिव और ब्रह्मा की सांसारिक अवतारी उपस्थिति नहीं होने से वे दिन प्रतिदिन के आधार पर सहज उपलब्ध नहीं हैं। मिथकों के अनुसार विष्णु के दशावतारों में राम और कृष्ण का जबरदस्त प्रभाव है। राम तो 'रामनाम सत्य है' सुनते मृतक संस्कार के सबसे प्रामाणिक सत्य की तरह परिभाषित हैं। उनकी सामूहिक याद किए बिना मनुष्य की मुक्ति नहीं होने का जनविश्वास है। कृष्ण राम की तरह अंतिम या पूर्ण सत्य तो नहीं हैं लेकिन राम से कहीं अधिक व्यापक फलितार्थों के कृष्ण जीवन की सांसों की धड़कन हैं। मनुष्य जीवन के जितने रूप हैं वे सब कृष्ण की सांसों से अनुप्राणित हैं। हिन्दू धर्म की मिथक कथाओं में सतरंगी झिलमिलाहट है। वहां आंसुओं और रुदन को भी कला की पारंगतता का साधन बना दिया गया है। कृष्ण की मुस्कराहट जीवन में सार्थक है लेकिन आदर्शों के प्रति प्रतिबद्ध तथा सीता के वियोग में रोते हुए राम का चेहरा मनुष्य होने की गंभीरता का सबसे मजबूत शिलालेख है।

राम और कृष्ण के अमर चरित्रों को भारतीय अस्मिता और यादघर में कबीर, रहीम, तुलसीदास, सूरदास, जायसी और रसखान जैसे अमर कवियों ने इतिहास की स्याही से वक्त के माथे की लकीरें बनाकर लिखा है। इनमें भी कबीर सबसे पहले हुए हैं। ऐसे हुए हैं कि अब तक सबसे पहले ही हैं। नायकों के गुणों का बखान करना और वीरपूजा के जुमले में काव्य का सृजन करना विश्व साहित्य की परंपरा है। भारत के आदिकवि वाल्मीकि और यूनानी महाकाव्यों के प्रणेताओं ने यही सब कुछ किया है। ऐसा करना एक परंपरा की शुरुआत की मील का पत्थर है। कबीर ने संसार के इतिहास में सबसे पहले और प्रामाणिक कवि के रूप में इस तिलिस्म को तो? दिया। कबीर के लिए ईश्वर है भी और नहीं भी। यदि है तो वे उसे मनुष्य होने का प्रमाणपत्र देते हैं। मनुष्य में ईश्वरत्व ढूं?ना एक उदात्त और उदास भावना एक साथ है। ईश्वर को इंसान बनाने की कोशिश कबीर की कविता का अद्भुत आचरण है।

सबसे बड़े दार्शनिक दीखते कबीर सांसारिक जीवन को आत्मा के लिहाफ या चादर की तरह ओढ़ते हैं। औरों के जीवन में रंगों, छटाओं, विवरणों और उपलब्धियों का बखान होता होगा। कबीर की निर्विकार्यता कविता के साकार होने का सबसे बड़ा यत्न है। चमत्कार वह नहीं है जो चमत्कार की तरह महसूस हो। चमत्कार तो वह है जिसमें कुछ भी नायाब, अनायास या सहसा नहीं हो। फिर भी वह मन में स्फुरण पैदा कर दे। कबीर सुसंस्कृत भाषा, व्याकरण, प्रतिमानों, स्वीकृत मानदंडों और समयसिद्ध रूपकों को झुठलाते सहज बखानी करते हैं। सहजता बडे दार्शनिक सत्यों को कैसे जन्म देती है। इस रहस्य को बूझने के लिए कबीर की कविता के सामने नैतिक आचार्यों को भी घुटने टेकने पड़ते हैं।

जीवन, साहित्य, अस्तित्व और अंर्तदृष्टि के एकमात्र पडाव का नाम है सत्य। सत्य वह हवा है जिसे मुट्ठी में बंद किया जा सकता है। लेकिन ऐसी कोई मुट्ठी होती कहां है। हवा तो लेकिन होती है। सत्य वह धुआं है जिस पर चढ़कर अंतिम होने की अटारी तक पहुंचा जा सकता है। अटारी तो होती है लेकिन वैसा धुआं पैदा करने वाली आग कहां है। सत्य तो नदी की खिलखिलाहट का सतरंग है। पानी की शीतलता और बहाव में नदी की किलकारी अप्रतिहत गूंजती है लेकिन उसकी अंर्तध्वनि में अनहद नाद के गूंजने को तरन्नुम की तकनीक से फारिग होकर कौन आत्मसात कर पाता है। यदि ये सब चमत्कार, निष्कर्ष या अंतिम होने के समानार्थी समीकरण हैं तो यह सवाल पूरी दुनिया में सबसे बेहतर, सबसे प्रामाणिक विधि से और भविष्य तक की पीढ़ियों को चुनौतीविहीन और निर्विकल्प बनाते कबीर ही क्यों नजर आते हैं।

सत्ताकुलीन समाज द्वारा कबीर की सीख की दुर्गति की जा रही है। मुसलमान और ईसाई को जबरिया हिन्दू बनाकर उस प्रक्रिया को घर वापसी कहा जा रहा है। कबीर तो आत्मा और परमात्मा तक की घर वापसी के फेर में नहीं थे। उन्होंने तो अपने दुनियावी चरित्र को सफेद धुली बिना दाग वाली चादर की तरह जैसे का तैसा रख देने की सूचना दी थी। उनके लिए तो महानता भी एक विकार है जो मनुष्य के चरित्र को अतिरंजित करती है। सत्य के अन्वेषक कबीर उस अनहद नाद में लीन हो गए थे जो अंर्तयात्रा किसी को भी पाथेय तक पहुंचा सकती है। **कबीर से बेहतर सेक्युलरवाद की परिकल्पना भारतीय संविधान में भी नहीं है। संविधान तो सेक्युलरवाद के नाम पर अलग अलग कोष्ठकों में धर्मगति को नियंत्रित करता है। कबीर मुफलिस थे अर्थात आत्मा के निर्द्वन्द्व गायक। मौजूदा राजसत्ता उनके सही अर्थ को नहीं बूझती हुई उलटबांसी में रकीब का आचरण कर रही है।**

मैं एक प्रतिष्ठित शो रूम गाड़ी से जा रहा था कि फोन की घण्टी बज उठी

"सर, महावीर होटल से बोल रहे हैं, हमारे यहाँ गुजराती-फूड-फेस्टिवल चल रहा है। पिछली बार भी आप आये थे। आप विजिटर बुक में अच्छे कमेंट्स देकर गए थे, सर!"

"देखता हूँ", कहकर मैंने फोन बंद कर दिया।

गाड़ी, थोड़ी आगे चली ही होगी कि फिर से एक कॉल आया, "सर, आपके जूते घिस गए होंगे। नए ले लीजिए।"

"कौन बोल रहे हो, भाई? आपको कैसे पता चला मेरे जूते घिस गए हैं?"

"सर, मैं सुंदर फुटवियर से बोल रहा हूँ। हमारी दुकान से आपने डेढ़ साल पहले जूते खरीदे थे। हमारा कंप्यूटर बता रहा है आपके जूते फट रहे होंगे या फटने ही वाले होंगे!"

"भैया, क्या ये जरुरी है कि मेरे पास एक जोड़ी जूते ही हों? वक़्त-बेवक्त इस तरह फोन करना कहाँ की सभ्यता है, मेरे भाई?", कह कर मैंने फिर फोन काट दिया।

मैंने फोन काटा ही था कि घण्टी वापस घनघना उठी, "सर, आपकी गाड़ी की सर्विसिंग ड्यू हो गई है, छह महीने हो गए हैं।"

"भाई, आपको क्यों परेशानी हो रही है? मेरी गाड़ी की मैं सर्विसिंग करवाऊँ या न करवाऊँ? मेरी मर्ज़ी।

कोई प्राइवेसी नाम की भी चीज़ होती है, दुनिया में?"

गुस्से में मैंने फोन काट तो दिया पर वो एक बार फिर बज उठा, "सर, कल पैडमैन की आइनॉक्स में मैटिनी शो की टिकट बुक कर दूँ।" इस बार एक लड़की थी।

"क्यूँ मैडम?"

"सर, हमारा सिस्टम बता रहा है कि आप अक्षय कुमार की हर मूवी देखते हैं, इसलिये!"

मैं मना करते-करते थक चुका था, सो पीछा छुड़ाते हुए बोला, "चलो, बुक कर दो।"

"ठीक है, सर! मैं मोबाइल नम्बर नाइन नाइन टू..... वाली मैडम को भी बता देती हूँ। हमारा सिस्टम बता रहा है वो हमेशा आपके साथ टिकट बुक कराती रही हैं।"

अब तो मैं घबरा गया,

"आप रहने दीजिए।" कहते हुये मैंने एक बार फिर फोन काट दिया।

शो रूम पहुँचकर मैंने एक शर्ट खरीदी। बिल काउंटर पर गया तो उसने पूछा, "सर, आपका मोबाइल नम्बर?"

"मैं नहीं दूँगा।"

"सर, मोबाइल नंबर देने से आपको 20त्न लॉयल्टी डिस्काउंट मिलेगा।"

"भाई, भले ही मेरे प्राण माँग लो, लेकिन मोबाइल नम्बर नहीं दूँगा।"

मैंने दृढ़ता से जवाब दिया।

"सर, इतनी नाराजगी क्यों?"

"इस मोबाइल के चक्कर में मेरी प्रायवेसी की ऐसी की तैसी हो गई है।

मेरा नम्बर, पता नहीं कितनों में बँट गया है?

कल को नाई कहेगा, "सर, आपके बाल बढ़ गए होंगे!"

मुझे तो डर है की 60 की उम्र आते आते अर्थी वाला भी ये न कह दे कि,

"समय और बच्चों का आजकल कोई भरोसा नहीं है अंतिम यात्रा के लिए एक सुन्दर-सी अर्थी बुक करवा लीजिये।"

- अमित सिंह

अपनी पहचान बनायें

आजकल हर व्यक्ति अपनी एक अलग पहचान बनाना चाहता है। हर किसी की चाह होती है कि वह समाज में एक अलग अस्तित्व के साथ जाना जाए। इसकी शुरूआत बचपन में ही हो जाती है। प्राय: छोटे बच्चों इस प्रकार की गतिविधियाँ करते हैं कि घर के लोग उनकी ओर आकर्षित हों और उनकी गतिविधि की प्रशंसा करें। यह इच्छा बड़े होने के साथ-साथ और अधिक प्रबल हो जाती है पर वास्तव में बच्चों को यह नहीं पता होता है कि अपनी व्यक्तित्व को बनाने के लिए उन्हें क्या करना चाहिए। बच्चों की गतिविधियों में ही उनकी सफलता की सीढ़ी छिपी होती है जिसको जानना बहुत आवश्यक है। इस संसार का हर बच्चा एक विशेष गुण लिए ही जन्म लेता है।

हर बच्चा अपने आप में एक फल के बीज की तरह दूसरे बच्चों से भिन्न होता है। उसके विषय में यह जानना ज़रूरी है कि वह किस फल का बीज है और उसी के अनुसार उसको वातावरण, खाद, पानी प्रदान करना भी आवश्यक है। इस कार्य में अध्यापक एवं अभिभावक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। वे अपने बच्चों को उनके प्रकृति के अनुसार ही पनपने का मौका दें। यदि बच्चे को उसकी प्रकृति के अनुसार ही बढ़ने का मौका मिले तो वह अवश्य ही वह जीवन में सफलता की उचाइयों को छुएगा। इसके लिए उन्हें अनेक प्रकार के संघर्षों का सामना भी करना होगा और अपना एक अलग मार्ग बनाना होगा। अपनी एक विशेष छवि अपने ही कार्यों द्वारा निर्मित करनी होगी। उसे अपना एक लक्ष्य बनाना होगा और उस लक्ष्य को सिद्व करने के लिए जी तोड़ मेहनत भी करनी होगी। यदि प्रत्येक बच्चों को बढ़ने तथा पनपने के लिए उचित वातावरण तथा अवसर मिलता है तभी एक अच्छे समाज का भी निर्माण होगा। एक अच्छे समाज से ही एक सुदृढ़ राष्ट्र का निर्माण हो सकेगा।

ऋषिपाल चौहान, चेयरमैन
जीवा पब्लिक स्कूल